अभिनव मीमांसा

जुलाई–सितम्बर, 2023

संपादक-डॉ. विवेक पाण्डेय

पवन कुमार की ग़ज़लें

(1)

अधूरी ज़िन्दगी है
हर इक शै में कमी है

ख़ुद अपना हूँ मुख़ालिफ़[1]
अजब रस्साकशी है

मेरी आंखों के अन्दर
कोई सूखी नदी है

किसी का मुन्तज़िर[2] हूँ
घड़ी बिगड़ी पड़ी है

समाअत[3] के लिए अब
सितमगर ख़ामुशी है

क़ज़ा[4] भी ज़िन्दगी के
बहाने ढूँढ़ती है

किसी की बन्दगी भी
किसी भी नाख़ुशी है

1. दुश्मन, 2. प्रतीक्षा करना, 3. सुनने की प्रक्रिया, 4. मौत।

इस ज़माने को हवा का रूख़ बताने के लिए
कुछ-न-कुछ तो चाहिए आखिर उड़ाने के लिए

कुछ भी वो अपनी तरक़्क़ी के लिए करना नहीं
कोशिशें करता है बस मुझको घटाने के लिए

ख़्वाहिशें, बेताबियाँ, चाहत, वफ़ा, बेदारियाँ[1]
ये हैं ईंधन ज़िन्दगी के कारख़ाने के लिए

ऐ मुहब्बत! कशमकश[2] में पड़ गया है दिल मेरा
तू छुपाने के लिए है या जताने के लिए

कर चुके पामाल[3] धरती को न जाने कितनी बार
रह गया अब आसमाँ सर पर उठाने के लिए

हिज्र[4] की इन सर्दियों में हमने अकसर यूँ किया
धूप में बैठे तेरी यादें सुखाने के लिए

[रचनाकार आई.ए.एस. (आर.आर. 2008) के वरिष्ठ अधिकारी हैं। संप्रति उ.प्र समाज कल्याण विभाग के निदेशक पद पर तैनात हैं।]

1. सावधानी, 2. उलझन, 3. क्षतिग्रस्त, 4. विछोह।